International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राजस्थान राज्य में स्वतंत्रता के बाद वस्त्र निर्माण का वकास और आधुनिक फैशन में योगदान

मधु शर्मा

रिसर्च स्कॉलर यूनिव र्सटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी जयपुर

सार

भारत की स्वतंत्रता के बाद राजस्थान राज्य में टेक्सटाइल उद्योग की वकासशीलता ने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई है और आधुनिक फैशन के वकास में योगदान कया है। राजस्थान , अपनी समृद्ध टेक्सटाइल परंपराओं और कुशल कारीगरों के साथ , एक प्रमुख टेक्सटाइल उत्पादन केंद्र के रूप में सामरिक हुआ है , जो व भन्न प्रकार के वस्त्र, हस्त शल्प और परिधानों का प्रदर्शन करता है। यह लेख स्वतंत्रता के बाद राजस्थान में टेक्सटाइल उद्योग की वकासशीलता और आधुनिक फैशन में इसके महत्वपूर्ण योगदान की खोज करता है। साहित्य समीक्षा की एक व्यापक समीक्षा और प्रायो गक डेटा का वश्लेषण के माध्यम से , यह अध्ययन राजस्थान में टेक्सटाइल उद्योग को निर्माण करने वाले प्रमुख कारकों, चरमों और गतिशीलताओं की जांच करता है। जिसके परिणामस्वरूप पता चलता है क स्वतंत्रता के बाद से राजस्थान के टेक्सटाइल उद्योग ने अद् वतीय वकास देखा है , जिसमें सामग्री की उपलब्धता , कुशल कारीगर्ता और सरकारी समर्थन जैसे कारक महत्वपूर्ण भू मका निभाई है। इंडस्ट्री महत्वपूर्ण रोजगार का मुख्य स्रोत बन गई है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लए आजी वका के अवसर प्रदान करते हुए। यह अध्ययन भारत की स्वतंत्रता के बाद राजस्थान राज्य में टेक्सटाइल उद्योग की वकासशीलता के क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई है और आधुनिक फैशन के वकास में योगदान कया है। राजस्थान , अपनी समृद्ध टेक्सटाइल परंपराओं और कुशल कारीगरों के साथ , एक प्रमुख टेक्सटाइल उत्पादन केंद्र के रूप में सामरिक हुआ है, जो व भन्न प्रकार के वस्त्र, हस्त शल्प और परिधानों का प्रदर्शन करता है। यह लेख स्वतंत्रता के बाद राजस्थान में टेक्सटाइल उद्योग की वकासशीलता और आधुनिक फैशन में इसके महत्वपूर्ण योगदान की खोज करता है।

कीवर्ड: राजस्थान राज्य,वस्त्र निर्माण, वकास,आधुनिक फैशन में योगदान,स्वतंत्रता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1.परिचयः-

राजस्थान का औद्यो गक क्षेत्र राजस्थान में वस्त्रों का एक प्र सद्ध केंद्र है। राजस्थान राज्य का कपड़ा उद्योग **8**से **10** प्रतिशत की वा र्षक वृ द्ध दर प्रद र्शत करता है और संथेटिक धागे, ऊनी वस्तुओं, सूती धागे और कपड़ों जैसे कपड़ा उत्पादों के निर्यात के लए व्यापक रूप से लोक प्रय है। निर्यात क्षेत्र जिसमें राजस्थान की मलें शा मल हैं , प्रति वर्ष **1300** करोड़ रुपये की रा श प्राप्त करते हैं। राज्य में कपड़ा मुख्य उद्योग होने के कारण , इस क्षेत्र में **400** से अ धक वनिर्माण इकाइयाँ हैं, जो इसे पतलून के लए संथेटिक कपड़ों में वशेषज्ञता वाला एक प्रमुख कपड़ा केंद्र बनाती है।

राजस्थान में मलों में कताई , बुनाई और प्रसंस्करण जैसे कपड़ा संचालन कए जाते हैं और इस लए राज्य असंगठित और संगठित क्षेत्र में सबसे बड़ा नियोक्ता भी है , राज्य की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लए इस क्षेत्र में **75,000**से अ धक लोग काम कर रहे हैं। राज्य एक बड़े क्षेत्र में **16**कताई मलों के साथ-साथ **5** खुली कताई इकाइयों का घर है , जो हर साल लगभग दो लाख टन पॉ लएस्टरध्विस्कोस और सूती धागे का निर्माण करती हैं। प्रति वर्ष इतने बड़े उत्पादन के साथ , राजस्थान अकेले राज्य की **44** प्रतिशत यार्न उत्पादन क्षमता को पूरा करता है।

राज्य में कताई मलों में **7.67**लाख स्पिंडल और **19,500**रोटर हैं। राजस्थान के मल क्षेत्रों में **48** बुनाई मशीनें और **2100** से अ धक करघे हैं जो इसकी उत्पादन क्षमता को समृद्ध करते हैं। राजस्थान में कपड़ा उद्योग का एक मजबूत इतिहास **60** के दशक का है , जब ब्रिटिश राज के **200** पुराने हथकरघे चलाए जा रहे थे और बड़ी संख्या में सूती धागे बनाने वाले कारखाने चल रहे थे। ले कन ऐसा तभी हुआ जब **1988** में औद्यो गक वकास को गति देने के लए औद्यो गक लाइसेंस वापस ले लए गए और कपड़ा उद्योग फला-फूला। वर्ष **1988** से **1990** के बीच **70** से अ धक बुनाई इकाइयाँ स्था पत की गईं।

राजस्थान में कताई उद्योग की महत्वपूर्ण उपस्थिति है। राजस्थान राज्य में स्था पत **29,200** रोटरों में से , जिले की संख्या **19,500**से अ धक है। उद्योगों में उपयोग की जाने वाली कताई मशीनें इटली, स्विट्जरलैंड और जर्मनी जैसे देशों से आयात की जाती हैं। राज्य में कताई क्षेत्र में **45**प्रतिशत स्पिंडल और **67** प्रतिशत रोटर हैं। ऐसी क्षमताओं के साथ राजस्थान राजस्थान का एक प्रमुख कपड़ा केंद्र बन गया है। एयर जेट स्पिनिंग जैसी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तकनीकों का उपयोग केवल राजस्थान में कया जाता है और यह राजस्थान में रेशम के धागे का उत्पादन करने वाला एकमात्र राज्य है।

एक अच्छी तरह से काम करने वाला बुनाई क्षेत्र राजस्थान के समृद्ध कपड़ा उद्योग की टोपी में एक और पंख है। राज्य में बुनाई क्लस्टर **440** इकाइयों का है। राज्य में पॉ लएस्टर-ऊन, पॉ लएस्टर- वस्कोस-मोडल, और पॉ लएस्टर- वस्कोस-एग्लेंटाइन और पॉ लएस्टर-ऊनी एग्लेंटाइन जैसे पॉ लएस्टर कपड़ों के व भन्न मश्रणों के **70** कोर मीटर से अ धक का उत्पादन कया जा रहा है।

राजस्थान भी धीरे-धीरे होम टेक्सटाइल और होम फर्नि शंग की संभावनाओं का दोहन कर रहा है। कुछ संगठन झुंड, वेल्क्रो कपड़े, थर्मल पर्दे और असबाब कपड़े जैसे उच्च गुणवत्ता और कार्यात्मक उत्पादों का उत्पादन कर रहे हैं। राज्य सरकार और मेवाड़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री जैसे निकायों के निरंतर समर्थन ने राज्य को निर्यात के मामलों में उत्कृष्टता तक पहुंचा दिया है। इसके अलावा, केंद्र सरकार ने तकनीकी रूप से केंद्रित सेवाओं को वक सत करने के लए मार्केट एक्सेस इनि शएटिव योजना के माध्यम से वत्तीय सहायता प्रदान की है।

1.1. स्वतंत्रता के बाद राजस्थान राज्य में कपड़ा निर्माण का वकासः-

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, राजस्थान राज्य में वस्त्र उद्योग में महत्वपूर्ण वकास देखा गया। राज्य की सु वधाजनक भूगो लक स्थिति, कच्चे माल की उपलब्धता, कुशल श्रम, और सहायक सरकारी नीतियां इस क्षेत्र के वकास में महत्वपूर्ण भू मका निभाईं।

राजस्थान में वस्त्र उद्योग के वकास में एक महत्वपूर्ण कारक कच्चे माल की उपलब्धता थी, जिसमें कपास, ऊन, और रेशम शा मल थे। राज्य में अच्छी कपास उत्पादन था, जो वस्त्र मलों के लए एक स्थिर आपूर्ति प्रदान करता था। इसके अलावा, राजस्थान ऊन उत्पादन के लए भी प्र सद्ध है, खासकर बीकानेर और जैसलमेर जैसे क्षेत्रों में, जो वस्त्र उद्योग को और बढ़ावा देते थे।

राजस्थान सरकार ने वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहित करने और निवेश आक र्षत करने के लए कई पहल लीं। उन्होंने वस्त्र पार्क और औद्यो गक संपदा स्था पत कीं, जहां उद्य मयों और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वस्त्र निर्माताओं को बुनियादी ढांचा और वत्तीय प्रोत्साहन प्रदान कया गया। इससे राज्य भर में कई वस्त्र मलें और कारख़ाने स्था पत करने में सहायता मली।

एक और महत्वपूर्ण वकास यह था क राजस्थान राज्य औद्यो गक वकास और निवेशकों को भाड़ा, ढांचा, और अन्य सहायता सेवाएं प्रदान करने में राजस्थान राज्य औद्यो गक वकास और निवेश निगम (त्प्प्ब्व्) की स्थापना हुई। त्प्प्ब्व् ने वस्त्र निर्माताओं को भू म , ढांचा, और अन्य सहायता सेवाएं प्रदान करके उद्यो गक वकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई।

राजस्थान की पारंपरिक वस्त्र कलाएं , जैसे ब्लॉक प्रंटिंग , टाई-डाई (बांधनी), और कढ़ाई (जयपुर और जोधपुर शैली समेत) , राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में मान्यता और मांग प्राप्त करीं। सरकार और व भन्न संगठनों ने इन पारंपरिक कलाओं को प्रचारित कया , जिससे शल्पग्रा मयों के लए बढ़ते रोजगार और आय का स्रोत बना।

वर्षों के दौरान, राजस्थान वस्त्र उद्योग, स्पराजस्थान में वस्त्र निर्माण का वकास महत्वपूर्ण रहा है। यहां तक क यह राज्य वश्वस्तरीय वस्त्र उत्पादन केंद्रों में से एक बन गया है। वस्त्र उद्योग में निरंतर वकास के कई कारक हैं।

स्थानीय स्त्री श्र मकों की अद् वतीय कौशल स्थिति, यहां उपलब्ध कच्चे माल की समर्पणता, और स्थानीय निर्माण को प्रोत्साहित करने वाली सरकारी नीतियां इस क्षेत्र के वकास को प्रभा वत करती हैं।

राजस्थान में कपास, ऊन, और रेशम उत्पादन का संगठित तंत्र मजबूत है। यहां पर्याप्त मात्रा में कपास उपलब्ध होने के कारण कपास के मलों का वकास हुआ है। यहां ऊन और रेशम उत्पादन भी उच्च है, जिससे यहां के वस्त्र उद्योग को बढ़ावा मला है।

सरकार ने वस्त्र उद्योग को बढ़ावा देने के लए कई पहल की हैं। उद्योग क्षेत्रों की वकास और निवेश को प्रोत्साहित करने के लए उद्योग क्षेत्र और औद्यो गक एस्टेट की स्थापना की गई है। इसके साथ ही , सरकार ने भू म , पाठशाला, और अन्य सेवाएं प्रदान करके वस्त्र निर्माताओं की सहायता की है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राजस्थान की पारंपरिक वस्त्र कलाएं , जैसे ब्लॉक प्रंटिंग , टाई-डाई (बांधनी), और कढ़ाई, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मशहूर हो गई हैं। इन कलाओं की प्रचार-प्रसार के लए सरकार और संगठनों ने कई उपाय अपनाए हैं। इससे स्थानीय कारीगरों को रोजगार के अवसर मले और उनकी आय में वृ द्ध हुई है।

वर्षों के दौरान , राजस्थान में वस्त्र उद्योग , स्पिनिंग, वो वंग, प्रंटिंग, डाइंग, और गारमेंट निर्माण जैसे क्षेत्रों में बड़ी उच्चता देखी गई है। जयपुर , जोधपुर, भीलवाड़ा, और पाली जैसे शहर महत्वपूर्ण वस्त्र केंद्रों के रूप में प्रमुख हुए हैं।

राजस्थान में वस्त्र निर्माण के वकास ने न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान कया है, बल्कि इसने क्षेत्र की समृद्ध वस्त्र वरासत को बचाने और प्रचारित करने में भी महत्वपूर्ण भू मका निभाई है। राजस्थान के वस्त्रों की प्र स द्ध उनके जीवंत रंगों , जटिल नक्काशी, और गुणवत्ता प्रद र्शत करती है, जो घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों को आक र्षत करते हैं।

1.3. वर्तमान राजस्थान अर्थव्यवस्था में राजस्थान टेक्सटाइल की भू मकाः-

राजस्थान के टेक्सटाइल उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं। राजस्थान राज्य को कपड़े निर्माण की समृद्ध परंपरा है और इसे व भन्न प्रकार के टेक्सटाइल, हस्त शल्प और परिधानों की व वधता के लए जाना जाता है। यहां राजस्थान के टेक्सटाइल उद्योग की भू मका को हाइलाइट करने के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को दिया गया हैः

रोजगार सृजनः राजस्थान में टेक्सटाइल उद्योग रोजगार का मुख्य स्रोत है , वशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के लए। यह बड़ी संख्या में लोगों को जी वका के अवसर प्रदान करता है , जिनमें बुनकर, रंगाई, मुद्रक, कढ़ाई करनेवाले और शल्पकार शा मल हैं। इस उद्योग में कुशल और अकुशल कर्मचारी दोनों का समर्थन कया जाता है , जो राज्य के समग्र आ र्थक वकास में योगदान करता है।

निर्यात में योगदानः राजस्थान के टेक्सटाइल उत्पाद , जैसे ब्लॉक-मुद्रित कपड़े , बंधनी टेक्सटाइल, कढ़ाई वाले परिधान और पारंपरिक राजस्थानी हस्त शल्प , राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में महत्वपूर्ण मांग है। यह उद्योग निर्यात क्षेत्र में महत्वपूर्ण भू मका निभाता है, वदेशी मुद्रा कमाता है और देश के निर्यात आय में योगदान करता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सांस्कृतिक वरासत की संरक्षणः राजस्थान का टेक्सटाइल उद्योग राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक वरासत की संरक्षण में मदद करता है। पीढ़ी से पीढ़ी चले आ रहे पारंपरिक कला और तकनीकों को अभी भी अपनाया और महत्व दिया जाता है। इस उद्योग की मुख्य भू मका ब्लॉक मुद्रण, बंधनी, हाथ कढ़ाई और आईना काम जैसी पारंपरिक टेक्सटाइल कला प्रद र्शत करने और सं र क्षत करने में होती है।

मूल्य संयोजन और उद्य मताः राजस्थान का टेक्सटाइल उद्योग छोटे माप के टेक्सटाइल व्यापारों को प्रोत्साहित करके उद्य मता को पोषण करता है। कई कलाकार और बुनकर ने अपना खुद का उद्यम सस्था पत कया है , जो उद्योग के वकास में योगदान करते हैं। उद्योग नवाचार, डजाइन वकास और उत्पाद व वधीकरण को बढ़ावा देकर मूल्य संयोजन को भी प्रोत्साहित करता है।

पर्यटन और हस्त शल्प प्रचारः राजस्थान का जीवंत टेक्सटाइल उद्योग पर्यटन क्षेत्र में बहुत सारे पर्यटकों को आक र्षत करता है और राज्य के पर्यटन क्षेत्र में योगदान करता है। पर्यटकों द्वारा स्मारिकाओं और पारंपरिक कलाकृतियों के रूप में मांगी जाने वाली कपड़े , कपड़े और हस्त शल्प उत्पादों से राजस्थान की यात्रा प्राप्त करती है। इससे पर्यटन उद्योग में आय और रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं।

सरकारी पहल और समर्थनः राजस्थान सरकार ने राज्य में टेक्सटाइल उद्योग को बढ़ावा देने के लए व भन्न पहल की हैं। यह उद्यम को प्रोत्साहन , सब्सिडी, कौशल वकास कार्यक्रम और बुनियादी ढांचे का समर्थन प्रदान करती है। इन उपायों के कारण टेक्सटाइल वनिर्माण इकाइयों का वस्तार और आधुनिकीकरण हुआ है।

समग्रता में, राजस्थान का टेक्सटाइल उद्योग न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था में मूल्य जोड़ता है, बल्कि सांस्कृतिक वरासत की संरक्षण , रोजगार सृजन, उद्य मता को प्रोत्साहन और पर्यटन क्षेत्र में योगदान करने का महत्वपूर्ण योगदान भी करता है। इससे राज्य की समृद्ध टेक्सटाइल परंपराओं का प्रदर्शन होता है, जब क बाजार की मांगों और प्रौद्यो गकी उन्नति के साथ समायोजित हो जाता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

1.4. कुछ पारंपरिकराजस्थान कपड़ा क्लस्टरः-

राजस्थान अपने पारंपरिक टेक्सटाइल संगठनों के लए जाना जाता है , जहां कुशल कारिगर और बुनकर पीढ़ियों से अपना कार्यक्रम बचपन से चला आ रहे हैं। यहां राजस्थान में कुछ प्रमुख पारंपरिक टेक्सटाइल संगठन हैंः

जयपुरः राजस्थान की राजधानी जयपुर , अपने टेक्सटाइल उद्योग के लए जाना जाता है। यह ब्लॉक प्रंटिंग के लए जाना जाता है, खासकर जयपुर की प्र सद्ध "जयपुर प्रंट्स" जिनमें जटिल पैटर्न और जीवंत रंग शा मल होते हैं। यहां कई पारंपरिक ब्लॉक प्रंटिंग इकाइयां और कारीगर हैं जो सुंदर कपड़े और परिधान बनाते हैं।

बगड़ूः जयपुर के पास स्थित छोटे शहर बगड़ू , अपनी अद् वतीय ब्लॉक प्रंटिंग तकनीकों के लए जाना जाता है। बगड़ू के कारीगर प्राकृतिक रंग और जटिल लकड़ी के ब्लॉक का उपयोग करके कपड़ों पर सुंदर प्रंट बनाते हैं। वशेष बगड़ू प्रंट्स को उनकी प्राकृतिक आकर्षण और पारंपरिक चर्म के लए फैशन उद्योग में लोक प्रयता मली है।

सांगानेरः जयपुर के पास एक और शहर सांगानेर , अपनी ब्लॉक प्रंटिंग और हस्त शल्पित कागज उद्योग के लए मशहूर है। यहां हाथ से बनाए गए सुंदर हाथ-ब्लॉक प्रंटिंग उत्पादों , सहित कपड़ों, चादरों और साम ग्रयों की प्रमुख उत्पादन की जाती है। सांगानेर की प्रंट को फूली आदर्श, ज्या मति पैटर्न और जीवंत रंगों से चरित्रित कया जाता है।

जोधपुरः जोधपुर बंधनी की एक प्र सद्ध टेक्सटाइल कला के लए जाना जाता है। जोधपुर के कुशल कारीगर छोटे बिंदियों को बांधकर छोटे डजाइन बनाते हैं और इसके बाद इसे रं गत करके सुंदर डजाइन बनाते हैं। बंधनी कपड़े साड़ी , पगड़ी और अन्य पारंपरिक परिधानों के निर्माण में व्यापक रूप से उपयोग होते हैं।

बाड़मेरः पश्चिमी राजस्थान में स्थित बाड़मेर , अपने हस्त शल्प टेक्सटाइल और कढ़ाई के कारणबाड़मेर प्र सद्ध है। बाड़मेर के कारीगर फूलकारी काम , एप्लिकेशन काम और कढ़ाई करके कपड़ों पर सुंदर मरर काम बनाते हैं। बाड़मेर के टेक्सटाइल के जटिल डजाइन और जीवंत रंगों की खा सयत के कारण यह फैशन उद्योग में बहुत मांग होती है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जैसलमेरः पश्चिमी राजस्थान का शहर जैसलमेर , "आरी" या "मोची भरत" के रूप में जानी जाने वाली पारंपरिक राजस्थानी कढ़ाई के लए प्र सद्ध है। जैसलमेर के कुशल कारीगर धागों , मोती, और शीशों का उपयोग करके सुंदर हाथ कढ़ाई बनाते हैं , जिनसे उन्होंने कपड़ों और परिधानों को सजाया है।

ये पारंपरिक टेक्सटाइल संगठन न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं , बल्कि राजस्थान की समृद्ध टेक्सटाइल वरासत को संर क्षत रखने में भी महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं। इन संगठनों के माध्यम से पीढ़ियों से चले आ रहे हाथकरघा वरासती और मान्यता प्राप्त करती हैं, जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर मान्यता और सराहना प्राप्त कर चुकी हैं।

2. साहित्य समीक्षाः-

एल.सी.आर. कार पनेटी और ओ.टी. ओइको (**2008)** ने कपड़ा क्लस्टर के भीतर उपयोग के लए डजाइन की गई बेंचमा कंग सूचना प्रणाली के वकास और अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित कया। उन्होंने सुझाव दिया क सहयोगात्मक बेंचमा कंग और प्रदर्शन प्रबंधन के लए वक सत सूचना प्रणाली साहित्य में समीक्षा की गई बेंचमा कंग प्रवृत्तियों के अनुरूप है। हालाँ क, अनुप्रयोगों से पता चला है क एक डेटाबेस बनाने में काफी लंबा समय लगता है जो बेंचमा कंग उद्देश्यों के लए वास्तव में सार्थक हो सकता है और इसके लए प्रबंधन परिपक्वता, प्रदर्शन प्रबंधन की एक संगठनात्मक संस्कृति और अंततः डेटा एकत्र करने और इनपुट करने के लए व्यवस्थित प्र क्रयाओं की आवश्यकता होती है। हालाँ क , बताई गई कठिनाइयों और बेंचमा कंग और प्रदर्शन प्रबंधन को दूर करने के लए परिपक्वता की कमी के बावजूद, शासी संस्थानों और अ धकांश कंपनियों ने महसूस कया है क इस प्रणाली का कार्यान्वयन अपने आप में इस क्लस्टर के सुधार के प्रबंधन की दिशा में एक कदम का प्रतिनि धत्व करता है।

पुइग, एफ., एट अल. **(2009)** ने कपड़ा उद्योगों और औद्यो गक जिलों के वनिर्माण कार्यों पर वैश्वीकरण के प्रभाव का वश्लेषण कया है और यह वनिर्माण निर्णयों की वशेषज्ञता और व वधीकरण को कैसे प्रभा वत करता है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला क वैश्वीकरण समय के साथ जिला और उप-क्षेत्र के प्रभावों को कम कर देता है , ले कन उन्होंने उत्पादकता पर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वशेषज्ञता और इस क्षेत्र की व्यावसायिक वृ द्ध पर व वधीकरण का सकारात्मक प्रभाव भी दिखाया है।

बूथबी, डी., डुफोर, ए., और टैंग, जे. **(2010)** ने प्रौद्यो ग कयों के संयोजन और प्र शक्षण के प्रकारों का अध्ययन कया है जो आमतौर पर कंपनियों द्वारा अपनाए गए प्रौद्यो ग कयों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने और सुधार करने के लए उनकी रणनीतियों के हिस्से के रूप में कए जाते हैं। उनका आ र्थक प्रदर्शन. पेपर इन सामान्य प्रौद्यो गकी-प्र शक्षण संयोजनों और उत्पादकता प्रदर्शन के बीच संबंध का अनुमान लगाता है। उन्होंने दिखाया क ये संयोजन उच्च उत्पादकता से जुड़े हैं। अध्ययन पुष्टि करता है क नई प्रौद्यो गकी अपनाने और संगठनात्मक परिवर्तन (वशेष रूप से इस अध्ययन में प्र शक्षण) के बीच महत्वपूर्ण संपूरकताएं हैं। नई प्रौद्यो ग कयों और प्र शक्षण के उ चत संयोजन से अकेले नई प्रौद्यो ग कयों को अपनाने की तुलना में अ धक उत्पादकता होती है। डेटा सेट ने उच्च स्तर की व शष्टता (अपनाई गई प्रौद्यो गकी के प्रकार और प्रदान कए गए प्र शक्षण के प्रकार) की पहचान करने और कसी दिए गए प्रौद्यो गकी के पूरक प्र शक्षण के प्रकारों की जांच करने में मदद की।

भास्करन एट अल.**(2012)** ने ग्रे तकनीक का उपयोग करके राजस्थानी कपड़ा व्यापारियों की स्थिरता का आकलन कया। लेखकों ने छह स्थिरता मानदंडों का उपयोग करते हुए तिरसठ आपूर्तिकर्ताओं को तीन श्रे णयों में वभाजित कयाः "अच्छा प्रदर्शन करने वाला ," "मध्यम प्रदर्शन करने वाला ," और "अपेक्षा के अनुरूप प्रदर्शन नहीं "ः भेदभाव, मानवा धकारों का उल्लंघन, बाल श्रम, अत्य धक काम के घंटे, अनु चत प्रतिस्पर्धा , और प्रदूषण। ग्रे वश्लेषण कार्यरत है क्यों क सभी मानदंड व्यक्तिपरक हैं। इस अध्ययन से संकेत मलता है क कपड़े और सहायक प्रदाताओं का मूल्यांकन लंबे समय तक कया जाता है। परिधान निर्माताओं ने प्रदूषण और अनु चत प्रतिस्पर्धा पर वचार कया। सहायक आपूर्तिकर्ता बच्चों को नियोजित नहीं कर सकते। इस अध्ययन के सुझाव अंतरराष्ट्रीय खुदरा वक्रेताओं के साथ परिधान आपूर्तिकर्ताओं के संबंधों को मजबूत करेंगे। राजस्थानी वस्त्र और परिधान अ धक प्रतिस्पर्धी बन सकते हैं।

मेसन, जी., लेरी, बी.ओ., और वेक्ची, एम. **(2012)** ने पांच-देश बहु-उद्योग डेटासेट का उपयोग करके मानव पूंजी और उत्पादकता वृ द्ध के बीच संबंधों का वश्लेषण कया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वश्लेषण एक क्रॉस-कंट्री उद्योग-स्तरीय डेटासेट का उपयोग करता है जिसमें **1979** की अव ध में पांच देशों (यूके, यूएस, फ्रांस, जर्मनी और नीदरलैंड) में **26** वनिर्माण उद्योगों के लए आउटपुट, पूंजी, श्रम इनपुट और कार्यबल कौशल की वा र्षक श्रृंखला शा मल है। द **2000.** उन्होंने पाया है क सकारात्मक मानव पूंजी के प्रमाण औसत श्रम उत्पादकता में वृ द्ध पर प्रभाव डालते हैं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला क बहु-कारक उत्पादकता (एमएफपी) वृ द्ध सकारात्मक रूप से उच्च-कुशल श्रम के उपयोग से संबं धत है।

3. शोध के उद्देश्यः-

- स्वतंत्रता से पहले और बाद में राजस्थान कपड़ा उद्योग की समग्र वृ द्ध और वकास की खोज करना
- आधुनिक फैशन में राजस्थान कपड़ा उद्योग का तुलनात्मक वश्लेषण करना।
- यह पता लगाने के लए क आजादी से पहले और बाद में राजस्थान के कपड़ा उद्योग के उत्पादन, निर्यात और आयात में महत्वपूर्ण बदलाव आया है या नहीं।

4. अनुसंधान क्रया व धः-

यह अध्ययन राजस्थान कपड़ा मंत्रालय द्वारा प्रका शत कपड़ा उद्योग और कपड़ा वनिर्माण की रिपोर्टों से लए गए डेटा के माध्य मक और तृतीयक स्रोतों पर आधारित है , जिन्हें अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त रूप से पुनर्व्यवस्थित , वर्गीकृत और सारणीबद्ध कया गया है। इसके अलावा, कुछ डेटा उद्योग से संबं धत पुस्तकों और पत्रिकाओं, प्रका शत पेपर, व भन्न समाचार पत्रों, बुलेटिनों से एकत्र कया गया है और कुछ जानकारी संबं धत वेबसाइटों के इंटरनेट से ब्राउज की गई है।

5. डेटा वश्लेषण और व्याख्याः-

डेटा वश्लेषण और व्याख्या परि शष्ट **1** और **2** पर आधारित है। ग्राफ सबसे अच्छा माध्यम है जिसके माध्यम से हम उद्योग की वृ द्ध और वकास के रुझान दिखा सकते हैं। यहां ग्राफ की मदद से शोधकर्ताओं ने आजादी से पहले और बाद में राजस्थान कपड़ा उद्योग में उत्पादन, निर्यात और आयात की प्रवृत्ति का वश्लेषण कया है। ये ग्राफ आधुनिक फैशन में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राजस्थान के वकास की प्रवृत्ति को भी दर्शाते हैं। इसके माध्यम से हम पछले दशक में उद्योग की वृद्ध और वकास का वश्लेषण कर सकते हैं।

ता लकाः **1** -राजस्थान में आजादी से पहले और बाद में कपड़ा उद्योग का वकास

कपड़ा उद्योग का वकास	**1947** से पहले (मूल रूप से)	**1947** के बाद (मूल रूप से)
उत्पादन	**10,00,00,000**	**15,00,00,000**
निर्यात	**7,00,00,000**	**20,00,00,000**
आयात	**12,00,00,000**	**21,00,00,000**
कुल	**29,00,00,000**	**46,00,00,000**

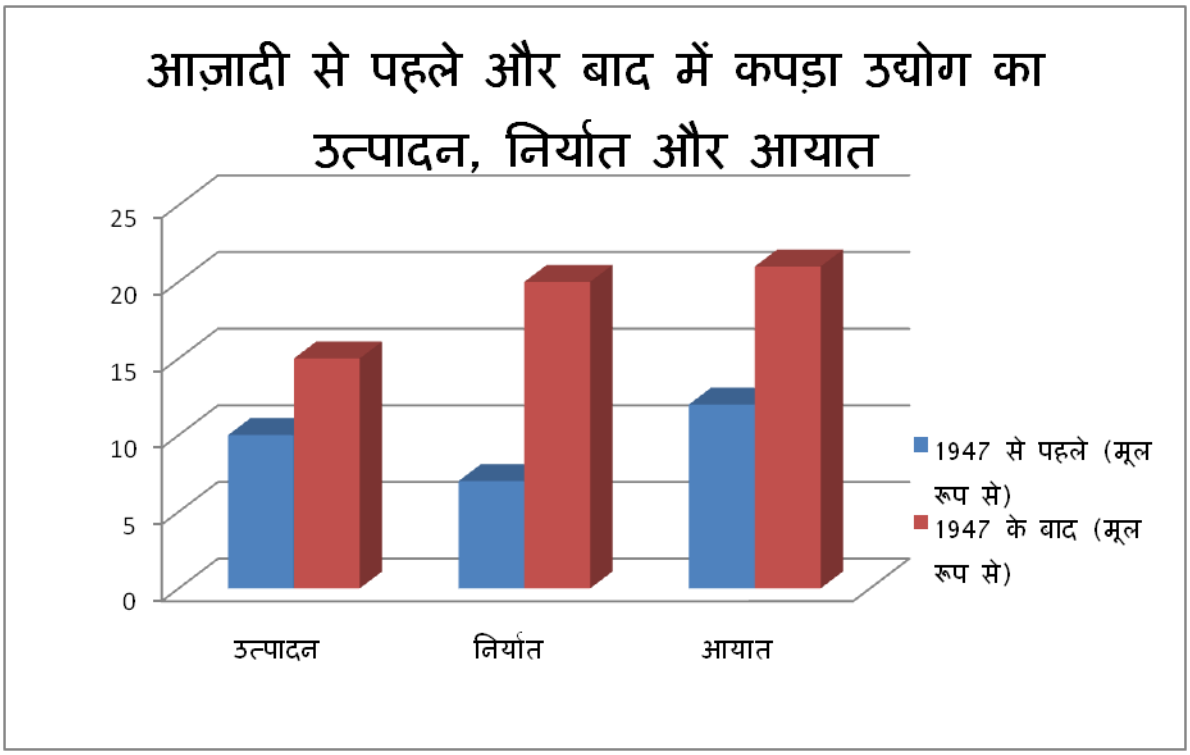

आकृति:**1** - राजस्थान में आजादी से पहले और बाद में कपड़ा उद्योग का वकास

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ता लका **1** से हम राजस्थान में आजादी से पहले कपड़ा उद्योग के प्रदर्शन को देख सकते हैं। तकनीकी कपड़ा उत्पादन , निर्यात और आयात रुपये पर थे। **10,00,00,000**करोड़. **7,00,00,0000**करोड़. और **12,00,00,000**करोड़. क्रमशः वर्ष **1947** में। उसके बाद उत्पादन बढ़ता गया और **15,00,00,000**करोड़ तक पहुँच गया। आजादी के बाद. जहां तक निर्यात का सवाल है तो आजादी के बाद इसमें लगातार बढ़ोतरी हुई। जहां तक आयात का संबंध है , अध्ययन अव ध के दौरान आयात में जबरदस्त वृ द्ध हुई और रुपये तक पहुंच गया। आजादी के बाद **21.00.00,000** करोड़ रु.

ता लका **2** -भारतीय कपड़ा और परिधान बाजार के वकास का अनुमान

कपड़ा और परिधान बाजार में वृ द्ध	**1947** से पहले	**1947** के बाद	सीएजीआर
निर्यात	**US$ 40bn.**	**US$ 150bn**	**14%**
घरेलू बाजार	**US$ 79bn.**	**US$ 250bn.**	**12%**
कुल	**US$ 119bn.**	**US$ 400bn.**	**13%**

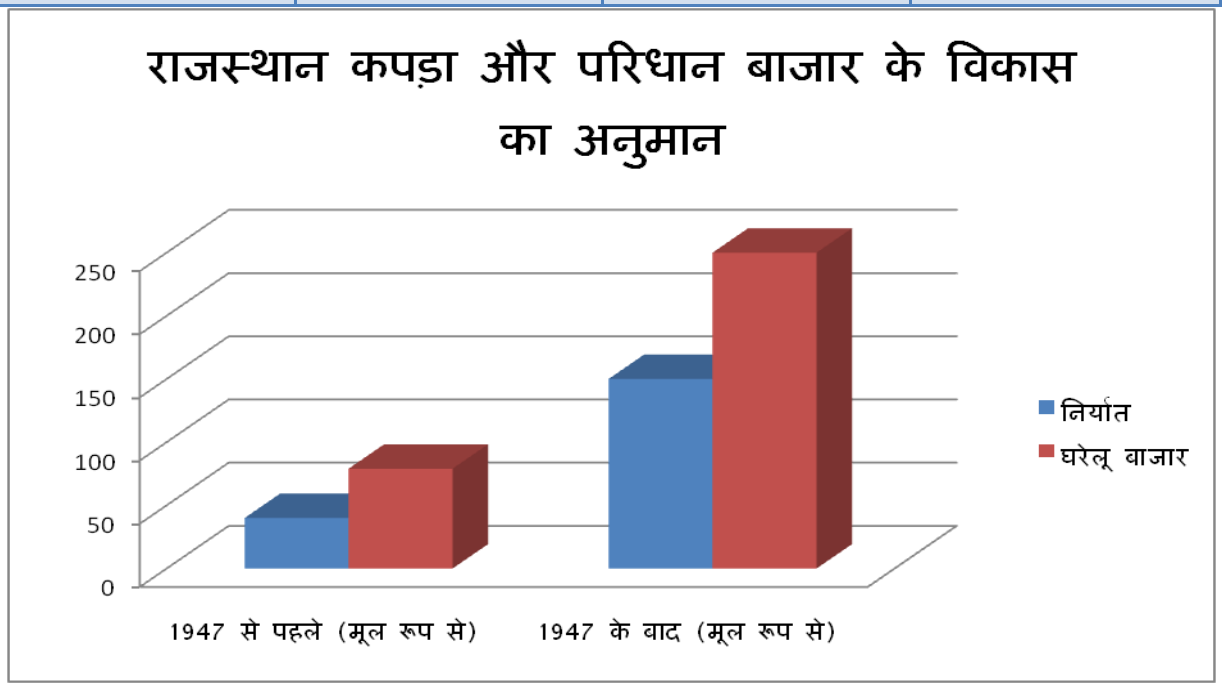

आकृति: **2** - भारतीय कपड़ा और परिधान बाजार के वकास का अनुमान

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 03 March- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कपड़ा बाजार के वकास का अनुमान। निर्यात में अपे क्षत उच्च वृ द्ध के अलावा , ग्राहकों की आय में वृ द्ध और कपड़ों की वस्तुओं पर भुगतान करने की उनकी बढ़ती प्रवृत्ति घरेलू बाजार की पूर्ण वृ द्ध को बढ़ा रही है। उभरते अंतरराष्ट्रीय और घरेलू बाजार के रुझानों का समर्थन करते हुए, यह उम्मीद की जाती है क भारतीय कपड़ा और पोशाक बाजार **119** बि लयन अमेरिकी डॉलर के मौजूदा स्तर से बढ़ सकता है। से **400** बि लयन अमेरिकी डॉलर तक। **2025-26**तक.

निष्कर्ष:-

स्वतंत्रता के बाद राजस्थान राज्य में टेक्सटाइल उद्योग की वकासशीलता ने क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को सकारात्मक रूप से परिवर्तित कया है और आधुनिक फैशन के वकास में महत्वपूर्ण योगदान कया है। राजस्थान , अपनी समृद्ध टेक्सटाइल परंपराओं और कुशल कारीगरों के साथ , टेक्सटाइल उत्पादन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है , जहां व भन्न प्रकार के वस्त्र , हस्त शल्प और परिधान दिखाए जाते हैं। इस अध्ययन ने दिखाया है क राजस्थान में टेक्सटाइल उद्योग ने स्वतंत्रता के बाद से लगातार वकास कया है , जिसमें उपलब्ध राक्षा सामग्री, कुशल कारीगरी, और सरकारी समर्थन जैसे कारक महत्वपूर्ण भू मका निभाई है। इसके साथ ही, राजस्थान के टेक्सटाइल उत्पादों का निर्यात देश की निर्यात कमाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस अध्ययन ने आधुनिक फैशन में पारंपरिक कारीगरी और तकनीकों की भू मका का महत्वपूर्ण उजागर कया है।

संदर्भः-

- भारतीय कपड़ा उद्योग का एक महत्वपूर्ण वश्लेषणः समावेशी वकास और सामाजिक जिम्मेदारी पर एक अंतर्दृष्टिय लाल आर.सी. , प्रोफेसर, डॉ. मुल्तानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर और चैधरी चरण संह वश्व वद्यालय, मेरठ, भारत **(2019)**।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में कपड़ा उद्योग की भू मकाय दिव्या पी सोलंकी सहायक प्रोफेसर, मरांबिका कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट , राजकोट, गुजरात, भारतय खंड **3**य अंक **3**य सतंबर **2017**य पेज नंबर **60-65.**
- भारत के कपड़ा उद्योग पर एक रिपोर्ट - एक वश्लेषण , परिधान निर्यात संवर्धन परिषद, **2009,**कपड़ा, **2001-2002** से वा र्षक रिपोर्ट

- वा र्षक रिपोर्ट **2009-10,**कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार **www-ministryofteÛtiles-gov-in**
- वा र्षक रिपोर्ट **2021:** भारतीय कपड़ा और परिधान उद्योग , डीजीसीआईएंडएस और वजीर वश्लेषण।
- कपड़ा क्षेत्र पर मेक इन इं डया का प्रभावय सुजीतगुल्हाने , रंजीततुर्कमाने सेंटर फॉर टेक्सटाइल फंक्शंस, मुकेश पटेल स्कूल ऑफ टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एंड इंजीनियरिंग , भारत **(2017)**
- वदेश व्यापार समीक्षा, भारतीय वदेश व्यापार संस्थान, वॉल्यूम। एक्सएलआईवी नंबर **2,**जुलाई- सतंबर **2009**।
- गाड गल डी.आर., द इंडस्ट्रियल इवोल्यूशन ऑफ इं डया इन रीसेंट टाइम्स **1860-1939,**पांचवां संस्करण, ऑक्सफोर्ड यूनिव र्सटी प्रेस, दिल्ली, **1972**।
- भारत के कानून कार्यालय **g-khurana@indialawoffices-com www-indialawoffices-com**
- कपड़ा मंत्रालय , भारत सरकार , व भन्न वा र्षक रिपोर्ट। कॉर्पोरेट उत्प्रेरक (इं डया) प्राइवेट ल मटेड **Sateesh-culkarni@cci-in**
- कपड़ा मंत्रालय, भारतीय सूती कपड़ा उद्योग, पी. गांधी, **1929-1930**
- फाउंडेशन, आई.बी. **(2016, 11** जुलाई)। **11** जुलाई **2016** को **http%//www-ibef-org/industry/teÛtile**से लया गया
- जैन, एस. **(2010).** भारतीय कपड़ा उद्योग एक वकास परिप्रेक्ष्य। संगापुरः वर्धमान समूह
- जयराज, के. (**2012)**। एक कपड़ा कंपनी में स्वोट और प्रमुख घटक वश्लेषण का अनुप्रयोग। भारत
- प्रसाद, आर.के. **(2015)**। भारतीय परिधान और कपड़ा उद्योग का वश्लेषण। भारत
- कपड़ा मंत्रालय। (**2014-2015)**। औद्यो गक नीति एवं संवर्धन वभाग , प्रेस सूचना ब्यूरो। भारतः इं डयन टेक्सटाइल जर्नल